



रानी लक्ष्मीबाई : एक महान वीरांगना

डॉ. खेमराज आर्य, सहायक प्राध्यापक इतिहास,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय श्योपुर म.प्र.
मोबाइल नम्बर - 8719000682

सारांश :- रानी लक्ष्मीबाई झाँसी रियासत के राजा गंगाधर राव की प्रमुख रानी थी। उस समय झाँसी मराठा शासित एक रियासत थी। वह भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई. के विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्ताओं में से एक थीं। उनको आज भी भारत में ब्रिटिश शासन के प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में प्रमुख रूप से याद किया जाता है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी एक अविस्मरणीय भूमिका है। रानी लक्ष्मीबाई भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की एक महान वीरांगना होने के साथ ही महिला सशक्तिकरण का एक अद्भुत उदाहरण भी प्रस्तुत करती हैं। प्रजा हितैषी, योग्य सैनिक व नेतृत्वकर्ता, स्वाभिमानी, स्वतंत्रता प्रिय, शस्त्र विद्या में निपुण, देश के प्राण न्योक्षावर करने को तत्पर आदि गुणों से परिपूर्ण एक सशक्त महिला थी। जिसने अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे दी थी। वह भारत की प्रत्येक महिला के साथ ही संपूर्ण भारतीयों के लिए एक प्रेरक की भूमिका अदा करती हुई प्रतीत होती है। उनका नाम विश्व इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो चुका है, जिसे मिटाना नामुमकिन है। वो एक सच्ची देशभक्त, वीर, निडर और साहसी महिला थी। ऐसी वीरांगना को मेरा नमन।

परिचय :- जन्म : 19 नवम्बर, 1828 ई. वाराणसी। माता-पिता : भागीरथी बाई व पिता मोरोपंत तांबे। परिवार : मराठी ब्राह्मण परिवार। बचपन का वास्तविक नाम : मणिकर्णिका रखा गया, लेकिन घर पर प्यार से उन्हें 'मनु' और 'छबीली' कहकर पुकारा जाता था। प्रशिक्षण: घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरंदाजी आदि विवाह : 1842 ई. में झाँसी के राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ। पुत्र : उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसकी चार महीने की अल्पायु में ही मृत्यु हो गई। इसके बाद उन्होंने दामोदर राव को पुत्र के रूप में गोद लिया। बलिदान (मृत्यु) : 18 जून, 1858 ई., ग्वालियर।

प्रारंभिक जीवन :- रानी लक्ष्मी बाई का जन्म 19 नवंबर, 1828 ई. को वाराणसी में माता भागीरथी बाई व पिता मोरोपंत तांबे के मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके बचपन का वास्तविक मणिकर्णिका, रखा गया, लेकिन घर पर प्यार से उन्हें 'मनु' और 'छबीली' कहकर पुकारा जाता था। बचपन में ही उनकी माता का निधन हो जाने के कारण पिता ने ही उनका लालन-पालन किया। उनको बचपन से ही घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरंदाजी आदि की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान किया गया। उनका विवाह 1842 ई. में झाँसी के राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ। इसके बाद उनका नाम 'लक्ष्मीबाई' पड़ा। उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसकी ललवार महीने की अल्पायु में ही मृत्यु हो गई। इसके बाद उन्होंने एक बालक को पुत्र के रूप में गोद लिया, जिसका उन्होंने नाम दामोदर राव रखा। दामोदर राव को गोद लेने के कुछ ही समय बाद राजा गंगाधर राव का भी निधन हो गया।

स्वतंत्रता के लिए संघर्ष :- राजा की मृत्यु के बाद ब्रिटिश सरकार के तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर-जनरल लॉर्ड डलहौजी द्वारा उस समय संपूर्ण भारत में भारतीय राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने के लिए चलाई जा रही नीति "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स" ('हड़प नीति') (Doctrine of Lapse) का फायदा उठाते हुए दामोदर राव को राजा का वैध उत्तराधिकारी नहीं मानते हुए झाँसी के मराठा राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने का फरमान जारी कर दिया। जब अंग्रेजों ने रानी लक्ष्मीबाई से झाँसी के किले को खाली करने को कहा। तब रानी ने दृढ़ता और निडरता के साथ गरजते हुए कहा कि — "मैं अपनी झाँसी किसी भी कीमत पर नहीं दूंगी!"

1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका :- उसी समय संपूर्ण भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की जोर-शोर से तैयारी चल रही थी। अनेक राज्यों के राजाओं, जमींदारों, सैनिकों, जागीरदारों आदि के द्वारा इसका बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार किया जा रहा था। झांसी रियासत में विद्रोह की शुरुआत 4 और 5 जून, 1857 ई. की रात को भारतीय सैनिकों ने कर दी और ब्रिटिश साम्राज्य के के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत कर आजादी की अलख जलाई। मार्च, 1858 ई. में ब्रिटिश सरकार की अंग्रेजी सेना ने तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के निर्देश पर ब्रिटिश सेनापति ह्यू रोज़ के नेतृत्व में झांसी रियासत पर आक्रमण कर झांसी के किले को चारों तरफ से घेर लिया। रानी ने अपनी सेना को सफल नेतृत्व प्रदान किया और अंग्रेजों की सेना को कड़ी टक्कर दी। रानी लक्ष्मीबाई ने अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को अपनी पीठ पर बांधकर, घोड़े पर सवार होकर, दोनों हाथों में तलवार लेकर, दुश्मनों से युद्ध किया। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, "एक विश्वासघाती सैनिक दूल्हा सिंह ने अंग्रेजों के लिए किले का गुप्त दक्षिणी दरवाजा खोल दिया, इस गद्दारी के कारण अंग्रेजी सेना किले के अंदर घुसने में सफल हो गई और झांसी की जनता का भारी नरसंहार ब्रिटिश सेना द्वारा किया गया। अंततः ब्रिटिश साम्राज्य की विशाल सेना के समक्ष झांसी रियासत की हार हुई, रानी लक्ष्मीबाई को अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बांधकर, ब्रिटिश सेना को चकमा देकर वहां से कालपी होते हुए ग्वालियर पहुंच गई। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध मराठा सेनानी तात्या टोपे और अन्य विद्रोही सैनिकों की सहायता से उन्होंने ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया।

बलिदान :- इसके बाद ब्रिटिश सेना ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया। 18 जून, 1858 ई. को रानी लक्ष्मीबाई वीरता व बहादुरी के साथ ब्रिटिश सेना से लड़ते समय एक अंग्रेज नेरानी लक्ष्मीबाई के सिर पर तलवार से प्रहार किया जिससे उनको गंभीर चोट आई और वह घोड़े से गिर गई। उनके सैनिक उनको पास के एक मंदिर में ले गए जहां उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने स्वयं से वादा किया था कि उनका शव अंग्रेजों के हाथ कभी भी न लगने पाए। इसलिए उनके सैनिकों ने उनके शव को मंदिर में ही अग्नि के हवाले कर दिया।

रानी लक्ष्मीबाई पर लिखी गई प्रमुख पुस्तकें :- रानी लक्ष्मीबाई (1828-1858) के अदम्य साहस और जीवन संघर्ष पर प्रसिद्ध लेखकों ने कालजयी पुस्तकें लिखी हैं। इन कृतियों में उनकी शौर्य गाथा और ऐतिहासिक जीवन का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

1. **झांसी की रानी** (उपन्यास) : हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार वृंदावनलाल वर्मा द्वारा 1946 ई. में लिखा गया यह ऐतिहासिक उपन्यास उनके जीवन पर प्रकाश डालने में एक मील का पत्थर माना जाता है।
2. **झांसी की रानी** (कविता) : कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित इस कविता ने उनको अमर कर दिया है, जिसकी पंक्तियाँ — "खूब लड़ी मर्दाना वह तो झांसी वाली रानी थी।" यह कविता देश के बच्चे-बच्चे की जुबान पर हैं।
3. **रानी : झांसी की योद्धा रानी** (Rani: Warrior-Queen of Jhansi): प्रतिभा रानाडे द्वारा लिखित यह पुस्तक रानी लक्ष्मीबाई के असाधारण जीवन, उनके संघर्षों और दूरदर्शिता का गहन शोधपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करती है।
4. **रानी** (उपन्यास): यह लेखिका जयश्री मिश्रा द्वारा अंग्रेजी में लिखा गया एक ऐतिहासिक उपन्यास है जो रानी के जीवन पर आधारित है।
5. **द ववीन ऑफ झांसी** (The Queen of Jhansi): यह पुस्तक पी.वी. लक्ष्मीप्रसाद द्वारा लिखित है। इसमें रानी के जीवन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का सजीव विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
6. **लक्ष्मी बाई, रानी ऑफ झांसी** (Lachmi Bai, Rani of Jhansi): माइकल व्हाइट द्वारा अंग्रेजी में लिखी गई यह पुस्तक रानी के साहसिक व्यक्तित्व के दर्शन कराती है।

रानी लक्ष्मीबाई के विषय में विद्वानों के प्रमुख कथन :- एक अंग्रेज (जिसका जन्म ऑस्ट्रेलिया में हुआ था) वकील जॉन लैंग जिसने की रानी लक्ष्मीबाई का मुकदमा लड़ा था ने रानी लक्ष्मीबाई को नजदीक से देखा था। जॉन लैंग ने रानी को उस समय देखा था जब मराठा रियासत झांसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन कर लिया गया था। उस समय रानी लक्ष्मीबाई अपनी एक तीन मंजिला हवेली के रानी महल में शरण ले रखी थी। लैंग मेरठ से एक अखबार का प्रकाशन किया करते थे। लैंग अच्छी फारसी और हिंदुस्तानी भाषा बोल लेते थे। उस समय लैंग ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक मुकदमा जीता था। जब लैंग पहली बार भारत आए तो रानी

लक्ष्मीबाई ने उनको लेने घोड़े के एक स्थ के साथ अपने दीवान और एक सहयोगी को आगरा भेजा था। एक नौकर आगरा से झांसी तक लैंग को पंखा झालते हुए आया था। झांसी में रानी महल के बगीचे में बनाए गए शामियाने तक लैंग को लाने के लिए एक 50 घोड़ों की टुकड़ी के साथ पालकी भेजी गई। जब लैंग शामियाने में पहुंचा तो रानी लक्ष्मीबाई पर्दे की ओट में एक कोने में बैठी हुई थी तभी उनके दत्तक पुत्र दामोदर ने वो पर्दा हटा दिया। रेनर जेम्स ने अपनी किताब में इस घटना का वर्णन लैंग के शब्दों में इस प्रकार किया है कि, "रानी मध्यम कद की तगड़ी महिला थी। उनकी युवास्था में उनका चेहरा बहुत सुंदर रहा होगा। लेकिन अब भी उनके चेहरे में आकर्षण कम नहीं हुआ है। मुझे उनकी एक चीज अच्छी नहीं लगी उनका चेहरा जरूरत से ज्यादा गोल था। उनकी आँखें बहुत सुंदर थी तथा नाक भी काफी नाजुक थी। उनका रंग गोरा नहीं था। उन्होंने कोई भी जेवर नहीं पहन रखा था सिवाय एक बाली के। उन्होंने सफेद मलमल की साड़ी पहन रखी थी। एक चीज जो उनके आकर्षक व्यक्तित्व को बिगड़ती थी वो थी उनकी फटी हुई आवाज।" कैप्टन रॉड्रिक्स ब्रिक्स वह पहला अंग्रेज व्यक्ति था जिसने रानी लक्ष्मीबाई को लड़ते हुए बहुत ही नजदीक से देखा था। उसने लिखा है कि, "रानी घोड़े पर सवार होकर, अपने मुँह से लगाम पकड़े हुए हैं और दोनों हाथों से तलवार बड़ी ही कुशलता के साथ चला रही।" रॉड्रिक्स ने यह तय किया कि वो स्वयं आगे जाकर रानी पर वार करेंगे। लेकिन जब जब उन्होंने ऐसा करने का प्रयास किया रानी के घुड़सवार सैनिक उनकी इस योजना को असफल कर देते थे। सैनिकों का प्रयास था कि रॉड्रिक्स का ध्यान रानी पर से हट जाए। रॉड्रिक्स ने जब आसपास की सारी बाधाओं को पार कर रानी के नजदीक पहुंचने ही वाला था कि उसी समय जनरल ह्यूजेज की एक ऊंट की टुकड़ी ने वहां प्रवेश किया। ह्यूजेज इस टुकड़ी को रिजर्व रखे हुए था। इस टुकड़ी का प्रयोग वह जवाबी हमले के लिए करने वाला था। इस टुकड़ी के युद्ध में प्रवेश करने से ब्रिटिश खेमों में फिर से एक नई जान आ गई। रानी उनकी इस बात को तुरंत भांप गई। रानी के सैनिक भागे नहीं लेकिन धीरे धीरे उनकी संख्या कम होती गई। उस लड़ाई में भाग ले रहे एक अंग्रेज जॉन हेनरी सिल्वेस्टर ने अपनी किताब में लिखा है कि, "रानी अचानक ज़ोर से चिल्लाई कि मेरे पीछे आओ। पंद्रह घुड़सवारों का एक जत्था उनके पीछे हो लिया। वो लड़ाई के मैदान से इतनी तेजी से पीछे हटी कि अंग्रेज सैनिकों को इसे समझने में कुछ सेकेंड का समय लगा।" रॉड्रिक्स ने सैनिकों से चिल्लाकर कहा कि, रानी को पकड़ो वो हमसे बचकर जा रही है। रानी वहां से निकलकर मुश्किल से एक मिल की दूरी पर ही पहुंची थी कि रॉड्रिक्स की सेना ने कोटा की सराय नामक स्थान पर आकर उनको घेर लिया। अब लड़ाई नए सिरे से शुरू हुई। अंग्रेजों की सेना की संख्या रानी के एक सैनिक के दुगुनी थी। एक अंग्रेज सैनिक जिसे वह युद्ध में व्यस्त होने के कारण देख नहीं पाई थी, ने उनके सीने में एक कटार घोंप दी। रानी बड़ी तीव्र गति से घूमती और हमला करने वाले पर तलवार लेकर टूट पड़ी। उनको लगी चोट अधिक गहरी नहीं थी, लेकिन उस चोट से खून बड़ी तेजी से निकल रहा था। अचानक उनके सामने पानी का एक झरना (नाला) आया, उनको लग रहा था कि उनका घोड़ा उसे आसानी से पार कर जाएगा। उन्होंने घोड़े को एड लगाई लेकिन घोड़ा बड़ी तेजी से रुका जिससे उनकी गर्दन उससे जा लगी। फिर उन्होंने घोड़े को एड लगाई लेकिन घोड़े ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। उसी समय उन पर किसी ने राइफल से गोली चलाई जो कि उनकी कमर में पीछे से आकर लगी। रानी की बाएं हाथ की तलवार हाथ से छुटकर नीचे गिर गई। उन्होंने अपने हाथ से अपने निकलते हुए खून को रोकने का प्रयास किया। एंटोनी फ्रेजर ने अपनी किताब में लिखा है कि, तब तक एक अंग्रेज रानी के घोड़े के बगल में पहुंच गया। उसने रानी पर हमला करने का प्रयास किया। रानी ने भी अपने दाएं हाथ की तलवार से उस पर वार किया लेकिन अंग्रेज सैनिक का वार इतना तेज था कि वह उनके सिर पर लगा और उनका माथा फट गया। और वह उनके निकलने वाले खून से लगभग अंधी हो गई। लेकिन रानी ने फिर से उस पर जवाबी हमला किया, लेकिन वो सिर्फ अंग्रेज सैनिक के कंधे को ही जखमी कर पाई। रानी घोड़े से नीचे गिर गई। तभी उनके एक सैनिक ने घोड़े से उतरकर उनको अपने कंधे पर बिठा लिया और पास के एक मंदिर में ले गया। रानी अभी भी जीवित थी। मंदिर के पुजारी ने उनके सूखे होंठ को गंगा जल लगाकर तर किया। अंग्रेज अभी भी फायरिंग कर रहे थे। रॉड्रिक्स ने जोर से चिल्लाकर कहा वो लोग मंदिर के अंदर गए हैं। हमला करो। रानी अभी भी जिंदा है। पुजारी रानी के लिए प्रार्थना कर रहे थे। रानी ने अपनी दूसरी आँख खोली और कहा कि, "दामोदर का ध्यान रखना। मैं उसे तुम्हारी देखरेख में छोड़ती हूँ। उसको छानवी ले जाओ। दौड़ो उसे ले जाओ।" उन्होंने अपने गले से मोतियों का हार निकालने की बहुत कोशिश की, लेकिन वो ऐसा नहीं कर पाई और वह

बेहोश हो गई मंदिर के पुजारी ने रानी के गले से हार निकालकर एक अंगरक्षक के हाथ में रख दिया और कहा कि, यह दामोदर के लिए है। उनकी सांस तेज चलने लगी, शरीर से खून बड़ी मात्रा में बह रहा था। अचानक जैसे उनमें जान आ गई हो आंख खोलकर वह बोली, "अंग्रेजों को मेरा शरीर नहीं मिलना चाहिए।" यह कहने के बाद उनकी सांसे थम गईं उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। रानी के अंगरक्षकों ने आनन-फानन में लकड़ी एकत्रित कर उनके पार्थिव शरीर को अग्नि के हवाले कर दिया। उनके चारों तरफ रायफलों की गोलियों की आवाज गूंजती चली जा रही थी। मंदिर की दीवार के बाहर सैकड़ों ब्रिटिश सैनिक पहुंच चुके थे। मंदिर के अंदर से चलने वाली तीनों रायफलों जब बंद हो गईं तब अंग्रेज मंदिर के अंदर घुसे। सबसे पहले रॉड्रिक्स ब्रिक्स अंदर घुसे। वहां चारों तरफ लाश ही लाश थी। उनको सिर्फ एक ही तलाश थी रानी लक्ष्मीबाई की। तभी उनकी नजर उस चिता पर पड़ी जिसकी लपटें धीमी पड़ चुकी थी। इस लड़ाई में लड़ रहे कैप्टन वलेमिंट ब्रॉकर हेमिंग्स ने रानी के अंतिम क्षणों का वर्णन किया है कि, हमारा विरोध खत्म हो चुका था। हथियारों से तैस एक महिला सैनिकों में जान फूंकने की कोशिश कर रही थी। वह बार-बार हार रहे सैनिकों का हौसला इशारों व तेज आवाज से बढ़ाने का प्रयास कर रही थी। लेकिन इसका कोई खास प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ मिनटों में हमने उस महिला पर भी काबू पा लिया। हमारे एक सैनिक की कटार के तेज वार से उनके सिर पर चोट लगी और सब खत्म हो गया। बाद में पता चला कि वो महिला और कोई नहीं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई थी। दामोदर को युद्ध के मैदान से सुरक्षित निकाल लिया गया। इराइम कोटि ने अपनी किताब में लिखा है कि, दामोदर राव ने दो साल बाद अंग्रेजों के सामने 1860 ई. में आत्मसमर्पण कर दिया। बाद में अंग्रेजों ने उन्हें पेंशन प्रदान की। अठारह वर्ष की उम्र में दामोदर राव की मृत्यु हो गई।

प्रसिद्ध कवियत्री व लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई पर जो कविता लिखी हैं, उसने उनको अमर कर दिया है।

“बुढ़ेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।”

उनके अदम्य साहस, वीरता, दृढ़ता, स्वतंत्रता प्रेम आदि पर ही प्रसिद्ध कवियत्री, लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान ने प्रसिद्ध कविता "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी" लिखकर भारतीय जनमानस में बाद के भारतीय स्वतंत्रता के सेनानियों में उत्साह एवं जोश का संचार करने का कार्य किया था। यह कविता आज भी उनके बलिदान और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का स्मरण दिलाती रहती है कि एक ऐसी भी वीरानना ने भारत में जन्म लिया था जिसने अपने प्राणों का बलिदान करके भी गुलामी को स्वीकार नहीं किया था। वो वर्तमान में भारतीय जनमानस में महिला सशक्तिकरण, वीरता, दृढ़ता, स्वतंत्रता आदि के लिए एक विस्मनीय व्यक्तित्व को बना चुकी हैं, जिसे शायद कोई भी भारतीय भविष्य में ही विस्मृत कर पाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. विकिपीडिया ।
2. राजाराम, कल्पना, गाँधी, नेहरू, टैगोर एवं आधुनिक भारत के अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व, 2025, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली ।
3. सिंह, डॉ राजेश कुमार, मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान, 2021, तुसेंट पब्लिकेशन, पटना ।
4. ओझा. शिवकुमार, आधुनिक भारत का इतिहास, 2020-21, बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज ।
5. अहीर, राजीव, आधुनिक भारत का इतिहास, 2019, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली ।
6. झा, अखिलेश, भारतीय इतिहास, 2016, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली ।